बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 291 कानपुर, 22 अप्रैल, 2025 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये

> पढ़ें पेज 2 पर

नींबू तथा लीची के बागों से अधिक उपज हेतु एडवाइजरी जारी

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने इस समय नींबू तथा लीची के बागानों में विभिन्न औद्यानिक क्रियाएं जिनसे अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन प्राप्त हो एडवाइजरी जारी की है। डॉ सिंह का कहना है कि इस समय नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू मुसम्मी कागजी नींबू इत्यादि फल विकास की अवस्था में है, इन फलों को इस समय गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड कि 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5 प्रतिशत की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। फलो का फटना तापक्रम के विकास से भी सीधा संबंधित है अतः फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिए 3–4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ–साथ पौधों के पास पलवार बिछा देते हैं जिससे नमी संरक्षित रहती है। पौधों पर 5 ग्राम बोरेक्स तथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट को 1 लीटर पानी में घोलकर, फलो पर छिड़काव करने से फलों के फटने की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है। डॉ. अरुण कुमार सिंह ने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है, लीची के फल विकास की अवस्था में है। लीची के फलों में फल बेधक कीट का प्रकोप हो तो फसल पर थिआक्लोप्रिड 0.75 की 1 मिलीलीटर दवा अथवा नोबाल्यूरान की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों में 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा डालने से फलों की मिठास और गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

रहस्य
कार्यक्रम
विज्ञापन,
ति आदि
ए संपर्क
:-
9 32483

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

अंक-111 मंगलवार,22 अप्रैल 2025 लखनऊ व एटा से प्रकशित R.N.I. No.: UPHIN/2007/20

नींबू तथा लीची के बागों से अधिक उपज हेतु एडवाइजरी जारी

रहस्य संदेश ब्यूरो

कानपुर - चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने इस समय नींबू तथा लीची के बागानों में विभिन्न औद्यानिक क्रियाएं जिनसे अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन प्राप्त हो एडवाइजरी जारी की है। डॉ सिंह का कहना है कि इस समय नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू मुसम्मी कागजी नींबू इत्यादि फल विकास की अवस्था में है, इन फलों को इस समय गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड कि 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5ब्र की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर

छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। फलो का फटना तापक्रम के विकास से भी सीधा संबंधित है अत: फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिए 3-4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ-साथ पौधों के पास पलवार बिछा देते हैं जिससे नमी संरक्षित रहती है।पौधों पर 5 ग्राम बोरेक्स तथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट को 1 लीटर पानी में घोलकर, फलो पर छिड़काव करने से फलों के फटने की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है।

डॉ. अरुण कुमार सिंह ने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है, लीची के फल विकास की अवस्था में है। लीची के फलों में फल बेधक कीट का प्रकोप हो तो फसल पर थिआक्लोप्रिड 0.75 की 1 मिलीलीटर दवा अथवा नोबाल्यूरान की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों में 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा डालने से फलों की मिठास और गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

वर्ष-18 अंक-173 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, मंगलवार 22 अप्रैल 2025

कानपुर से प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात, औरैया में प्रसारित

RNI No.- UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

नींबू तथा लीची के बागों से अधिक उपज हेतु एडवाइजरी जारी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के उद्यान वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने इस समय नींबू तथा लीची के बागानों में विभिन्न औद्यानिक क्रियाएं जिनसे अधिक उपज, गुणवत्ता और उत्पादन प्राप्त हो एडवाइजरी जारी की है। डॉ. सिंह का कहना है कि इस समय नींबू वर्गीय विभिन्न फलों जैसे संतरा किन्नू मुसम्मी कागजी नींबू इत्यादि फल विकास की अवस्था में है, इन फलों को इस समय गिरने से बचाने के लिए पौधे पर नेप्थलीन एसिटिक एसिड कि 50 मिलीग्राम दवा या प्लानोफिक्स 4.5न्न की 0.5 मिली लीटर दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़काव करने से फलों के फटने की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। फलो का फटना तापक्रम के विकास से भी सीधा संबंधित है,

फलों की तुड़ाई होने तक पौधों के पास हल्की नमी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। जिसके लिए 3-4 दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई करने के साथ-साथ पौधों के पास पलवार बिछा देते हैं जिससे नमी संरक्षित रहती है। पौधों पर 5 ग्राम बोरेक्स तथा 5 ग्राम जिंक सल्फेट को 1 लीटर पानी में घोलकर, फलो पर छिड़काव करने से फलों के फटने की प्रक्रिया को कम किया जा सकता है।

डॉ. अरुण कुमार सिंह ने बताया कि प्रदेश में कई स्थानों पर लीची भी बहुतायत में उगाई जाती है, लीची के फल विकास की अवस्था में है। लीची के फलों में फल बेधक कीट का प्रकोप हो तो फसल पर थिआक्लोप्रिड 0.75 की 1 मिलीलीटर दवा अथवा नोबाल्यूरान की 1.5 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों में 300 ग्राम पोटाश प्रति पौधा डालने से फलों की मिठास और गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।